Unit-II   Paper—104(1)

मूल्यांकन की अवधारणा एवं मूल्य निर्धारित तत्त्व (Concept of Evaluation and Related terms)

मूल्यांकन का स्वरूप — (Concept) — मूल्यांकन शब्द की उत्पत्ति मुख्यतः दो शब्दों के मिलन से हुई है — मूल्य + अंकन। 'मूल्य' का शाब्दिक अर्थ — वस्तु की विशेषता, उपयोगिता तथा 'अंकन' का शाब्दिक अर्थ, जीवन आयोजन के दौरान टिप्पणी करना होता है। मूल्यांकन का प्रयोग हम अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में करते हैं। जब हम शिक्षा, चिकित्सा, यातायात, खान-पान, आचार-विचार हर क्षेत्रों में जिस शैक्षणिक सिद्धान्तों के प्रयुक्त मंत्र की आवश्यकता होती है वह मूल्यांकन कहलाता है।

शिक्षा एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में मूल्यांकन एक नवाचार माध्यम बनकर उद्भूत हुआ है। आज बालक की वैयक्तिक भिन्नताओं की जाँच का सर्वोत्तम माध्यम मूल्यांकन ही है। इसके द्वारा हम व्यक्ति की सामाजिकता, ~~...~~तत्परता, सहयोग की भावना जैसे कई महत्वपूर्ण पहलुओं की जाँच मूल्यांकन परीक्षण की सहायता से कर सकते हैं। मूल्यांकन के द्वारा इस बात का निर्णय आसानी से किया जाता है कि कौन-सी वस्तु अच्छी है और कौन-सी बुरी। किसी वस्तु की बहुमूल्यता की जाँच, मूल्यांकन की निर्णयात्मक प्रक्रिया के माध्यम से हो सकती है।

मूल्यांकन का अर्थ एवं कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ —

मूल्यांकन एक व्यापक उद्देश्य केन्द्रित प्रक्रिया है जो कि शैक्षिक अवधारणाओं का प्रबल अंग है, जिसके अन्तर्गत शैक्षिक लक्ष्य, व्यक्ति, दीक्षा एवं घटनाओं आदि का समावेश रहता है। व्यक्ति के चारित्रिक, मानसिक, शैक्षिक योग्यता तथा सामाजिक -

बाह्य तथा आन्तरिक विकास की जाँच-परख इस मूल्यांकन प्रक्रिया पर आधारित होती है। मूल्यांकन एक सेतु का काम करता है, शिक्षा तथा मनोविज्ञान के उद्देश्यों, लक्ष्यों को प्रस्फुटित करने के लिए। इसे कुछ विद्वानों ने निम्न रूप मे परिभाषित किया है —

क्वासमेयर और गुडविन के अनुसार "शिक्षा मे मूल्यांकन वह प्रक्रिया है कि जिसके द्वारा यह निर्णय किया जाता है कि किसी वस्तु की मादित सीमा और परिमाण, किसी मानदण्ड के आधार पर स्वीकार्य है अथवा वाछनीय है या नहीं।"

जेम्स एम० ली० के अनुसार "मूल्यांकन विद्यालय, कक्षा-कक्ष एवं स्वयं के द्वारा निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के सन्दर्भ मे छात्र की प्रगति की जाँच की जाती है।"

मूल्यांक के सन्दर्भ मे कोठारी आयोग के अनुसार "आज यह माना जाने लगा है कि मूल्यांकन एक अनवरत प्रक्रिया है, जो कि सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है तथा इसका शैक्षिक उद्देश्यों से घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है।"

<u>मूल्यांकन की विशेषताएँ</u> — इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ है —

(1) मूल्यांकन प्रक्रिया का प्रभाव छात्रों के सीखने पर पड़ता है।

(2) मूल्यांकन केवल कागज, कलम और परीक्षण तक सीमित नहीं है बल्कि इसके अन्तर्गत अनेक विधियों, प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।

(3) मूल्यांकन द्वारा मानवीय व्यवहारों, सिद्धान्तों आदि का बाह्य तथा आन्तरिक विकास किया जाता है।

— R.J.D.

(4) शिक्षक और विद्यार्थी के अभिभावक दोनों पक्ष मूल्यांकन का हिस्सा है।

(5) मूल्यांकन प्रक्रिया अधिगम की दिशा में छात्रों को प्रेरित करने में सहायक है।

(6) मूल्यांकन के द्वारा इस बात का फैसला किया जाता है कि कौन सी वस्तु अच्छी है और कौन सी बुरी है।

(7) मूल्यांकन की प्रक्रिया के द्वारा इस बात की जानकारी प्राप्त की जाती है कि विद्यार्थियों द्वारा शैक्षिक उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया जा सकता है।

(8) मूल्यांकन सतत रूप से चलने वाली प्रक्रिया है।

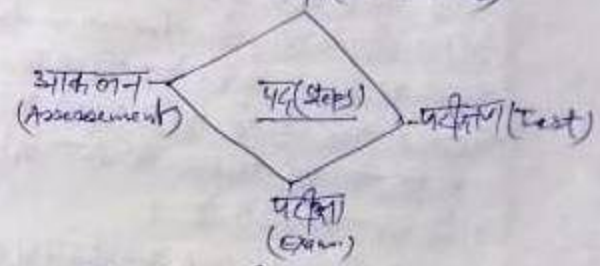

सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन —

सामाजिक विज्ञान में शिक्षण के लिए उपयोगी मूल्यांकन के कई प्रकार हैं जो क्रमशः निम्नलिखित हैं—

P.T.O.

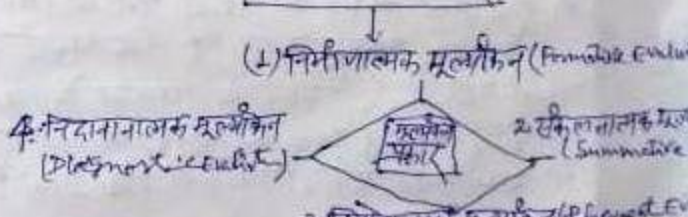

1. **निर्माणात्मक मूल्यांकन (Formative Evaluation)** — सामाजिक विषय अध्ययन में शिक्षण एवं अधिगम (Teaching-learning) प्रक्रिया को सफल बनाने हेतु इसका प्रयोग किया जाता है। शिक्षण उद्देश्यों के अनुसार छात्रों में योग्यताएँ विकसित हुई या नहीं अथवा हुई है तो कितनी हुई है, इसकी जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् छात्र के अधिगम में कोई विशेष कमी पायी जाती है, तो छात्र को पुनः शिक्षण देकर इसको दूर किया जाता है, इसे ही निर्माणात्मक मूल्यांकन कहते हैं। इस प्रकार का मूल्यांकन इकाई परीक्षण (test), गृह कार्य और कक्षा की अन्य क्रियाओं द्वारा किया जाता है। इस प्रकार मूल्यांकन लगातार चलता रहता है।

2. **संकलनात्मक मूल्यांकन (Summative Evaluation)** —
यह एक अलग प्रकार का मूल्यांकन है, जिसकी प्रक्रिया लगातार नहीं चलती है, बल्कि वार्षिक या पाठ्यक्रम की समाप्ति पर प्रयुक्त होती है। इस परीक्षण के अन्तर्गत यह भी देखा जाता है कि छात्रों ने कितने उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक की है। छात्रों की उपलब्धि का ग्रेडिंग, श्रेणीकरण, ~~प्रेस...~~ प्रोन्नतीकरण और प्रमाण-पत्र प्रदान करने हेतु किया जाता है। इसमें एक विशेषता यह है कि इसमें छात्रों की उपलब्धि की जाँच के साथ शिक्षण एवं शिक्षण-विधियों की प्रभावशीलता की जाँच भी हो जाती है।

3. **नियोजनात्मक मूल्यांकन (Placement Evaluation)**

नियोजनात्मक मूल्यांकन सामाजिक विषय अध्ययन के प्रथम स्तर पर बालक की स्थिति जानने के लिए प्रयोग किया जाता है। जब सामाजिक विषय का अध्यापक छात्रों को सामाजिक विषय का शिक्षण देना चाहता है, तो वह यह जानने का प्रयास करता है कि पढ़ाई जानेवाली विषय-वस्तु के पूर्व ज्ञान के सम्बन्ध में बच्चों की स्थिति क्या है? अर्थात् छात्र को ग्रहण की जानेवाली विषय-वस्तु से सम्बन्धित पूर्व ज्ञान कौशल आदि प्राप्त है, अथवा नहीं।

P.T.O. —

ताकि वह आगे के ज्ञान को ग्रहण करने में तत्पर हो सके। उस मूल्यांकन के कारण शिक्षक को बच्चों की कमजोरियों तथा सीखने के ज्ञान को समझने का तजुर्बा/कौशल हो जाता है। शिक्षक प्रत्येक छात्रों की पूर्व ज्ञान से सम्बन्धित पृष्ठभूमि को मजबूत करने का प्रयास करता है।

4. निदानात्मक मूल्यांकन (Diagnostic Evaluation)

निदानात्मक मूल्यांकन का प्रयोग सामाजिक विषय अध्ययन में निदानात्मक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया जाता है। ~~जब सामाजिक विषय का शिक्षक छात्रों को सामाजिक विषय की शिक्षा देने का प्रयास करता है, तब वह यह जानने का प्रयास करता है कि पदार्थों~~ यह अवधारणात्मक अवबोध (Conceptual Understanding), सीखने की प्रक्रिया और भाषा-दोषों के सन्दर्भ में सामाजिक विषय में बालक की सीखने की कठिनाइयों को खोज निकालने में समर्थ है। तदनुसार उनके पीछे सम्मिलित कारणों का पता लगाना और उनके समाधान हेतु उपचारात्मक शिक्षण द्वारा निदान खोजना निदानात्मक मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य है। कभी-2 सामाजिक अध्ययन में सीखने की समस्याओं का के निदान खोजने के निश्चित उद्देश्यों से विशेष परीक्षण तैयार किये जाते हैं। कमजोर और निम्न उपलब्धि वाले सामाजिक विषय के छात्रों की सीखने की प्रगति और गति में निश्चित रूप से सुधार होता है।

निर्माणात्मक एवं संकलनात्मक मूल्यांकन की प्रक्रिया-

निर्माणात्मक एवं संकलनात्मक शैक्षिक मूल्यांकन की प्रक्रिया लक्ष्य, शिक्षण सम्बन्धी अध्ययन और मूल्यांकन के स्रोतों पर निर्भर करती है। इसमें किसी एक की अनुपस्थिति मूल्यांकन प्रक्रिया में अवरोध उत्पन्न करती है। इसीलिए मूल्यांकन पूर्ण नहीं हो पाता है। निर्माणात्मक एवं संकलनात्मक ...

शैक्षिक मूल्यांकन को तीन भागों में बाँटा गया है—
1. लक्ष्यों का निर्धारण, 2. अधिगम अनुभव प्रदान करना, एवं 3. व्यावहारिक परिवर्तन के आधार पर मूल्यांकन।

1. लक्ष्यों का निर्धारण (Formulation of Objectives)— शैक्षिक मूल्यांकन के प्रथम पद में सामाजिक विज्ञान शिक्षण का नियोजन किया जाता है। सामाजिक विज्ञान के नियोजन में सर्वप्रथम प्रस्तुत प्रकरण से सम्बन्धित शिक्षण लक्ष्यों— ज्ञान, बोध, अनुप्रयोग, कौशल, रुचि एवं अभिवृद्धि आदि का निर्धारण किया जाता है। इन्हीं लक्ष्यों के आधार पर ही बालकों के व्यवहार में परिवर्तन से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त हो जाती है और कि उसकी उसकी शैक्षिक प्रक्रिया सही या गलत है। इस सोपान में शिक्षण लक्ष्यों का परिभाषीकरण करना भी आवश्यक है।

2. अधिगम अनुभव को प्रदान करना— बालक में अपेक्षित व्यवहार में परिवर्तन लाने हेतु सामाजिक विज्ञान शिक्षण प्रक्रिया से सम्बन्धित विविध क्रियाकलापों के आधार पर अधिगम अनुभवों को प्रदान किया जा सकता है। अधिगम अनुभव के सम्प्रेषण के पूर्व अधिगम अनुभवों की व्यवस्था, अधिगम सम्बन्धी परिस्थितियों का सृजन अत्यन्त आवश्यक होता है क्योंकि अधिगम अनुभव ही शैक्षिक मूल्यांकन प्रक्रिया का प्रमुख स्तम्भ है।

3. व्यावहारिक परिवर्तन के आधार पर मूल्यांकन— सामाजिक विज्ञान शिक्षण की प्रक्रिया में प्रदत्त अधिगम-अनुभवों द्वारा ही छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाना सम्भव है। छात्रों के व्यवहार में क्या अपेक्षित परिवर्तन हुए, यह शैक्षिक मूल्यांकन द्वारा ज्ञात किया जाता है। इसके लिये सामाजिक विज्ञान शिक्षण निबंधात्मक, वस्तुनिष्ठ, मौखिक परीक्षण एवं अन्य प्रकार की मूल्यांकन प्रविधियों द्वारा जाँच करता है।

मूल्यांकन के उपकरण एवं प्रविधियाँ— मूल्यांकन प्रक्रिया के निष्पादन में अनेक उपकरणों एवं

P.T.O.—

प्रविधियों का सहारा लिया जाता है जो निम्नलिखित हैं—

(1) साक्षात्कार (Interview)— विद्यालयों में छात्रों के क्रम मूल्यांकन हेतु साक्षात्कार प्रमुख प्रविधि है। छात्र के व्यक्तिगत विशेषताओं को ज्ञात (प्रकट) करने का प्रमुख साधन है।

(2) निरीक्षण (Observation)— यह प्रविधि छात्रों की आदतों और कुशलताओं के विकास को पहचानने के लिए उपयोगी है। उचित ढंग से किया गया निरीक्षण छात्रों के सम्बन्ध में उपयुक्त निर्णय करने हेतु विशेष महत्व रखता है।

(3) प्रश्नावली (Questionnaire)— छात्रों के व्यक्तिगत व्यावहारिक रुचियों एवं विशेषताओं के विकास से सम्बन्धित भिन्न प्रकार की सूचनाएँ प्राप्त करने हेतु प्रश्नावली बहुत सरल एवं उपयोगी प्रविधि है।

(4) क्रम निर्धारण मापनी (Rating Scale)— मूल्यांकन हेतु क्रम निर्धारण मापनी सबसे महत्वपूर्ण प्रविधि है। यह कुछ चुने शब्दों, वाक्यों, वाक्यांशों या अनुच्छेदों की सूची होती है जिसमें निरीक्षक मूल्यों के किसी वस्तुनिष्ठ मान के आधार पर कोई मूल्य या अंक क्रम निर्धारित अंकित करता है।

(5) पड़ताल सूची (Check List)— पड़ताल सूची वैयक्तिक सूचना एवं मतों को जानने की उपयोगी प्रविधि है। इसमें कुछ शब्दों, वाक्यों, वाक्यांशों या अनुच्छेदों की सूची होती है जिसमें निर्धारित की उपस्थिति या अनुपस्थिति को प्रकट करने के लिए निरीक्षक ( ) का चिन्ह लगाते हैं।

(6) छात्रों द्वारा निर्मित वस्तुएँ — (Pupil's Product)— छात्रों द्वारा निर्मित वस्तुएँ भी उनके व्यवहार की रुचि सम्बन्धी सूचनाएँ प्रदान करने हेतु महत्वपूर्ण प्रविधि के रूप में कार्य करती हैं।

(7) परीक्षा प्रविधि (Examination Technique)— इसके अन्तर्गत लिखित परीक्षाएँ, मौखिक परीक्षाएँ एवं प्रायोगिक परीक्षाएँ आती हैं।—

P.T.O.

पृष्ठ-16(8)

(i) लिखित परीक्षा (Written Examination) — वर्तमान समय में विद्यालयों में छात्रों की उपलब्धि का मूल्यांकन मुख्यतः लिखित परीक्षा के आधार पर ही होता है। इसी आधार पर उनकी कक्षोन्नति/प्रोन्नति निर्भर होती है।

(ii) मौखिक परीक्षा — (Oral Examination) — इस परीक्षा में मौखिक प्रश्न/वाद-विवाद/विचार-विमर्श के द्वारा छात्र के सूचनात्मक ज्ञान, पढ़ने की योग्यता, उच्चारण आदि की जाँच करते हैं। मौखिक परीक्षा के द्वारा छात्र के व्यक्तिगत गुणों एवं अवगुणों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

(iii) प्रायोगिक परीक्षा (Practical Examination) — इसका प्रयोग प्रायोगिक विषयों के मूल्यांकन में किया जाता है।

(3) अभिलेख (Records) —

(i) घटना वृत्त (Anecdotal Records) — इसमें छात्रों द्वारा किये घटनावश या आकस्मिक व्यवहार की जाँच की जाती है। घटना वृत्त द्वारा छात्रों के दूसरों के प्रति दृष्टिकोण को परखा जाता है।

(ii) संचित अभिलेख (Cumulative Records) — इसमें छात्रों के शैक्षिक, मानसिक, शारीरिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास की व्यक्तिगत संचित सूची प्रस्तुत करता है। इस प्रकार संचित अभिलेख छात्रों की विभिन्न दशाओं में हुई उन्नति एवं अवनति के विषय में सम्यक जानकारी कराने में सक्षम है।

(iii) छात्रों की डायरियाँ (Diaries of Pupils) — यह छात्रों की रुचियों, अभिवृत्तियों, व्यक्तिगत एवं सामाजिक समस्याओं आदि पर पर्याप्त रूप से प्रकाश डालती है। जिसके द्वारा ही मूल्यांकन सम्भव हो पाता है।

उपरोक्त विवरण मूल्यांकन के विभिन्न तत्वों-अवधारणा, परिभाषा, विशेषताएँ, पद, सामाजिक विज्ञान में प्रचलित मूल्यांकनों के प्रकारों एवं विधियों से सम्बन्धित है। जिसके आधार पर सामाजिक विज्ञान शिक्षक अधिगमकर्त्ता के उपलब्धियों का मूल्यांकन करते हैं।

वी. 24/03/2020